'परछाई नाच' उपन्यास में चित्रित समाज

भाोधकर्त्री–नीति
(हिन्दी–विभाग)
महर्शि दयानन्द वि"वविद्यालय
रोहतक।

प्रस्तावना-

'परछाई नाच' इतिहास की अन्तहीन सुरंगों, चमकदार आवेगों, दो संस्कृतियों, वर्गो और मूल्य–दृश्टियों के संघर्श की कथा है। उपन्यास मे अनेक स्तरों के संघर्श की कथा है। उपन्यास में अनेक स्तरों पर हिंसा, भय सं"ाय, क्रूर आततायी और मानवविरोधी भाक्तियों के रूप में बौनों और नुकीले दाँत–वाले लोगों की चर्चा है और पुलिस एवं समूचा प्र"ाासन–तन्त्र सब कहीं उनके साथ है। समाज में जो कुछ घटित होता है उसी की साहित्य मे अभिव्यक्ति होती है। समाज में सुख–दुख, राग–द्वेश और उससे उत्पन्न होने वाली समस्याएँ साहित्य में आकार ग्रहण करती है। मनुश्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के बिना नहीं रह सकता लेकिन कभी उसकी संगति समाज से नहीं बैठती है और कभी अपने मन से, ऐसे में मनुश्य की अनेक उलझन खड़ी हो जाती है, जो उसके जीवन में गतिरोध उत्पन्न कर देती है। ऐसे गतिरोधो को दूर करने के लिए मनुश्य को अधिक संघर्श"ाील और गति"ाील बनना पड़ता है। साहित्य वि"ोश रूप से मनुश्य के इसी संघर्श"ाील जीवन को प्रस्तुत करता है। 'परछाई नाच' उपन्यास भी वर्गो और मूल्य–दृश्टियों के संघर्श की कथा है। उपन्यास में अनहद व भोमल के प्रेम–प्रसंग को दृश्टिगोचर किया गया है। फिर धीरे–धीरे उनका पीढ़ियों पुराना अतीत चलता है तथा उस अतीत मे वर्तमान को खोज निकालने की कोि"ा"ा की जाती है। लेखक इतिहास के बिन्दुओं से दो वर्गो और संस्कृतियों का पक्ष और प्रतिपक्ष तैयार करता है। सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम से इस कथा के सूत्र जुड़ते है। इस भारतीय प्रतिरोध को अंग्रेजो ने 'गदर' कहकर उसका अवमूल्यन किया और कुछ सिपाहियों के असन्तोश में ही उसे सीमित कर दिया। इस गदर के बाद कानपुर के नवनिर्माण और विकास के दौर में, मेटकॉफ के वि"ोश कृपा–पात्र थे। दक्षिण भारतीय रामकृश्ण वेंकटे"वर चिदम्बर जिन्होनें विद्रोह के बीच अंग्रेजो की पैरवी करके उनकी वि"ोश कृपा प्राप्त की थी। इन्हीं रामकृश्ण का एक उद्दे"य यह था कि वह मजदूर वर्ग के द्वारा प्राप्त गए आन्दोलन के खतरों पर एक गुप्त और विस्तृत रिपोर्ट सरकार को दें। रामकृश्ण का एक बेटा सेना मे था जो दूसरी बडी लड़ाई मे मारा गया था और एक बेटा सदाि"ाव दस वर्श की अवस्था में 'छबीला' नाम से पारसी थियेटर और रंगमंच से जुड़ जाता है, जिसे नाराज पिता ने फिर कभी घर में घुसने नहीं दिया। आज वहीं सदाि"ाव वृद्ध है। सदाि"ाव की एक इच्छा यह है कि वह अपने संस्मरणात्मक इतिहास को कालपात्र की तरह जमीन मे गाड़कर रखें ताकि आगे आने वाले समय में लोग इस रंगारंग इतिहास से परिचित हो सकें। सदाि"ाव के बेटे की दोस्ती की वहज से अनहद परिवार मे आता है। निकटता की ि"ाराओं से फूला अनहद व भोमल का सम्बन्ध दिन–ब–दिन प्रगाढ़ हुआ है और उनके बीच अन्तरंगता की एक मजबूत गाँठ है। लेखक ने उपन्यास में प्रतिरोध की संस्कृति के अनेक रूप प्रस्तुत किए है। अंग्रेजो से आजादी पाने के लिए लड़ाई लड़ी जा रही थी साथ ही उन जमींदारों,

सूदखोरों व महाजनों से भी आजादी दिलाना था जो अपने रूतबे, धन और भाानो–"ोकत के लिए गरीब मजदूरों व किसानों का भाोशण करते है तथा साथ ही अपनी काम –वासना की भूख को भाांत करने के लिए उनकी बहनों, माँ और बेटी के साथ भेड़ियों जैसा व्यवहार करते है। स्त्री को सिर्फ भोगने को वस्तु समझा जाता था। स्त्री की यौनिकता पर पुरूश के अधिकार ने कुलवधुओं के लिए कुलीनता और मर्यादा जैसी भ्रामक अवधारणाओं को जन्म दिया बलात्कार एंव यौन भाोशण के भय को निरन्तर बनाए रखा तथा घर से बाहर वे"यावृति, स्त्री तस्करी एंव सैक्स बाजार जैसे घृणित कार्य व्यापारों को गति"ील बनााए रखा। स्त्री को पुरूश की यौन सन्तुश्टि का निश्किय माध्यम बनाए रखने के प्रयास में असीम सुन्दरी होना स्त्री के जीवन की सार्थकता समझा गया। उपन्यास मे कि"ाुक अनहद का मित्र है जिसके कवि पिता को उनकी कविताओं के लिए ब्रिटि"ा सरकार ने प्रताडित किया था। और उसी इतिहास को फिर आपातकाल मे दोहराया गया था। वे संभवतः दे"ा के अकेले कवि थे जिनहे अपनी कविताओ के लिए 4 बार जेल की सजा मिली थी। कि"ाुक के पिता को बाद मे पता चलता है कि सक्रिय अंधेरी भाक्तियां चिनगारियां की वसियत के सहारे उनहे ही ठुंठ रही थी। बौने और गंजों के लिए मजदूरो की गुलामी के पट्टों मे अनहद की सहमति और सहायता का वह उग्र विरोध करता है और प्रतिक्रिया में उसे गोली मारने तक की चेतावनी देता है।

इसी प्रतिरोध की एक कड़ी चिंगारियां है उसकी कई पीढियां अग्नितत्व वाले नामो से जुडती है –सुलगिनी, झुलसियां, अंगरूआ और उसका अपना पिता दहकान जिसने जमीदार की हत्या करके गुलामी के पट्टो को जलाया था। बंधुआ मजदूर की तरह काम करते हुए उसने जमींदार की बन्दुक से ही उसकी हत्या की थी और अपने दो साथियो एवं गर्भवती पत्नी को लेकर जंगल मे उतर गया था। चिंगारियां गांधीवादी ढंग से की गई लड़ाई से भाुरू करके उसकी सीमाएं और अर्न्तविरोध समझ कर इस स"ास्त्र प्रतिरोध की ओर आया है।

उपन्यास मे नुकीले दाँत वाला आदमी उस राजनीतिक व्यवस्था का प्रतीक है जो पूंजीपतियो–उद्योगपतियों के हितो को रक्षा कर रहा है। राजनीति के रहनुमा अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए गरीबो का भाोशण करते है। राजनीति के ये रहनुमा पूंजीपतियों–उद्योगपतियों के साथ मिलकर कुछ इस तरह अपने काले कारनामो को अंजाम देते है कि वह गरीबो को नौकरी का लालच देकर उनके रैनबसेरों को उनसे छीन लेती है और दूसरी तरफ अपनी अच्छाइयों का ठिंठोरा पिटती है कि हम उनको नौकरी दे रहे है यहां वो कहावत बिल्कुल सही बैठती है कि ''उन्हीं का चुन उन्हीं का पुन''। राजनीति के ये ठेकेदार गिरगिट को तरह अपना रंग बदलते हुए अपने पैरो को सत्ता मे जमाने को पूरी को"ा"ा करते है और अपने स्वार्थो मे इतना अंधा हो जाते है कि वे पवित्रता जैसे भाब्दों को अपने जीवन मे कोई महत्व नहीं देते बल्कि गंगा जैसे पवित्र नदी के पानी (जल) को भी चंद पैसो के लालच मे बेच देते है। राजनीति के भयानक जाल मे फंसकर मनुश्य जब अपने को उसमे से निकालने की को"ा"ा करता है तो वह अपने को उस दलदल में फंसे हुए मनुश्य के समान हो जाता है जो चाहने पर भी उससे निकल नहीं सकता।

गर्भ मे जब एक भ्रूण बनता है तो उसे सांसारिक मोह–माया का कोई ज्ञान नहीं होता, ठीक उसी प्रकार उपन्यास में अनहद के स्वप्न मे उन बौनो का चित्र अंकित होता है, जैसे वह भी गर्भ मे उत्पन्न हो रहे उस मॉस के लौथडे के समान है।

'परछाई नाच' एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। इसका केन्द्रिय पात्र अनहद आज के मध्यवर्गीय समाज का प्रतीक है जो अपनी लम्बी गुलामी के खिलाफ ऐंतिहासिक लड़ाई की विरासत को भूलकर बहुराश्ट्रीय उद्योगपतियों और फांसीवादीयों के आर्कशक और रहस्यपूर्ण मक्कड़जाल की ओर मुग्ध भाव से बड़ता जा रहा है। लेखक के मन में पिछली सदी के अंतिम द"ाक में पनपने वाला बाजारवाद है, जिसके तहत दे"ा–विदे"ा के पूंजीपति और उद्योगपति दे"ा की आम जनता को एक नई गुलामी के पट्टे मे जकडना चाहते है। उपन्यास के बौने पात्र इसी नई भाक्ति के प्रतीक है जो पूरे भूमण्डल को अपने अधिकार मे ले लेने की क्षमता रखते है। नुकीले दाँत वाला आदमी राजनीतिक व्यवस्था का प्रतीक है, जो पूंजीपतियों–उद्योगपतियों के हीतो की रक्षा कर रहे है। उपन्यास में प्रेम, भय, असुरक्षा एवं दमन, प्रतिरोध की संस्कृति और आम आदमी को पीड़ा को द"ार्या गया है।

'परछाई नाच' एक ऐसा उपन्यास है, जिसके केन्द्र मे सर्वहारा वर्ग या सामान्य जनता है। उनकी अपनी ख्वाहि"ों है, रंगबिरंगे सपने है, लेकिन प्रतिक्ल सामाजिक और तत् सबंधी परिस्थितियों के प्रभाव के कारण वे उनको असलियत मे परिणत नहीं कर पाते है। उपन्यास के अंत मे अनहद अपने साथी कि"ाुक के सामने अपनी अस्तित्व चिंताओं को अकुलाहट के साथ यो प्रकट करता है–''क्या है यह सब''? अनहद बुदबुदा रहा था।–'' आखिर कितने लोग मेरी हत्या करना चाहते है? कितने जाल बुने जा रहे है। मेरे चारों ओर? नुकीले दाँत वाला? बौना? चिंगारिया? तुम भी? सब अलग–अलग या फिर मिलकर एक साथ? आखिर मै ही क्यों?''

प्रियंवद ने आम आदमी की स्थिति को उसकी असलियत में प्रस्तुत किया है। आज हमारे तरह–तरह के सामाजिक सरोकारों के बीच आम आदमी की दखलअंदाजी बे"ाक एक अनिवार्य बात है, बावजूद इसके प्रतिदान के रूप मे अस्तित्वहीनता का एक कड़वा एहसास ही उसे चखने को मिलता है। 'परछाई नाच' मे चिंगारियों के माध्यम से लेखक इसी बात की व्यंजना करते है। ''मै वहीं अंतिम मनुश्य हूँ, जिसने अपने श्रम का मूल्य कभी नहीं पाया।

समाज के लिए उसका अस्तित्व इतना नगण्य है कि उसके द्वारा किये श्रम का कोई महत्व..... कोई मूल्य नहीं समझता। जबकि प्रकारान्तर और परोक्ष से उसे श्रम को पूरा समाज भोगता है। इस समाज की यह विचित्र बनावट है और इस मनुश्य के श्रम की कथा बहुत बड़ी है। मैं इसी कथा मे हूँ।''

सहायक ग्रंथ–सूची

1. मधुरे"ा, ''समय समाज और उपन्यास'' भारतीय ज्ञानपीठ।
2. डॉ0 रोहिणी अग्रवाल, ''साहित्य का स्त्री–स्वर'' साहित्य भण्ड़ार, 50 चाहचन्द, इलाहाबाद–3, पृ0–13
3. प्रियंवद, 'परछाई नाच', भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीटू"ानल एरिया, लोधी रोड़ नई दिल्ली–11003, तीसरा सं0–2005
4. प्रियंवद, 'परछाई नाच', भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीटू"ानल एरिया, लोधी रोड़ नई दिल्ली–11003, तीसरा सं0–2005